

प्रिय जनक:

मैं आपको एक महत्वपूर्ण टीके के संबंध में जानकारी देने के लिए लिख रहा हूँ जो आपके किशोर की मैनिंजोकोकल बीमारी, एक दुर्लभ, लेकिन खतरनाक जीवाणु संक्रमण जो मैनिंजाइटिस और रक्त विषाक्तता का कारण है, से रक्षा कर सकता है। इसे मैनिंजोकोकल संयुक्त टीका कहा जाता है, और यह कार्यालय एवं रोग नियंत्रण एवं रोकथाम केन्द्रों (सीडीसी) द्वारा यह सलाह दी जाती है कि इस टीके को ११ से १८ वर्षों की आयु वाले किशोरों को उनकी ११-१२ वर्षीय जांच पर, लगाया जाना चाहिए।

मैनिंजोकोकल बीमारी के मामलों की संख्या एक वर्ष से दूसरे वर्ष बदलती रहती है। १९९८ से २००७ तक, प्रत्येक वर्ष लगभग १५०० अमेरिकी संक्रमित हुए थे, और प्रत्येक नौ में से करीब एक की मृत्यु हो गई। किशोर और युवा वयस्क विशेष रूप से इस संक्रमण के लिए अतिसंवेदशील हैं। दरअसल, सभी मैनिंजोकोकल बीमारी के मामलों में से करीब १५ प्रतिशत किशोरों और युवा वयस्कों के बीच हुए हैं, और उनमें से हर सात में से करीब एक की मृत्यु हो गई।

कुछ जीवन शैली कारक किशोरों और युवा वयस्कों को रोग होने के खतरे में डाल देते हैं। इसमें शामिल है सामूहिक रहन-सहन की स्थितियाँ (दूर नींद शिविर, छात्रावास), अनियमित नींद पद्धतियाँ और संक्रमित व्यक्तियों के साथ निकट संपर्क (जो हो सकता है कि स्वयं रोग के लक्षणों को प्रकट न करते हों)।

रोग के प्रारंभिक लक्षणों का आसानी से एक वायरल बीमारी के रूप में गलत निदान हो सकता है, जैसे कि इन्फ्लूएंजा, लेकिन एक बार इसके शुरू होने पर, मैनिंजोकोकल बीमारी बहुत तेजी से बढ़ सकती है और ४८ घंटे के भीतर मौत का कारण बन सकती है। पांच में से एक जीवित बचा व्यक्ति स्थायी विकलांगता से पीड़ित हो जाता है जैसे कि, मस्तिष्क क्षति, सुनने की क्षमता खो जाना, दौरे पड़ना अथवा बांहों या टांगों का अंगविच्छेदन।

भवदीय,